भय–१

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

बूढ़ अशक्त अथर्व कवि छी हम
डरै छी
हमर पोथी–सबटा चोरी ने भ' जाय!
कत्तेक मेहनत कैने छी सरकार,
एत्तेक रास शब्द सजाबै ले
ल' जायत जँ क्यो
त कविता हमर रहियो जायत भरिसक
अनकर नामें–
कवि छूटि जायत इतिहास सँ ।

एतबहि–टा डर हमरा,
अहाँ कहब ई त बड़ छोट डर भेल
त सुनू–

बूढ़ अशक्त अथर्व कवि छी हम
कत्ते पाइ खरचलियै औ सरकार
हमरा पोसै ले
कत्तेक जतन सँ सजौलहुँ हमर मंडप
गहन मंत्र सँ रचल हमर चिता
लिखँ पड़ल हैत कत्ते–टा इतिहास
हमर कविता कुपिता पर

छोड़ि चलि जायत लोग हमरा
त बूझब–
कवि चलि जायत एहि पृष्ठ सँ
रहि जायत मात्र निष्ठुर कविता आ
पठित उपाख्यान ।

एतबहि–टा डर हमरा,
अहाँ कहब ई त बड्ड छोट डर भेल
त देखू–
बूढ़ अशक्त अथर्व कवि छी हम
डरै छी हमरा
मंच पर सँ बाजै जँ कहि दै क्यो
एत्ते रास माला सँ लदने छी हमरा सरकार,
जे वाणी सँ रुसी
कविते ने छोड़ि चलि जाय हमरा सँ!
से जँ भेल त बूझब,
ने हम रहलहुँ आ ने रहली हमर कविता ।

एतबहि–टा डर हमरा;
अहांके की कहू–
ईहो बड़ छोट डर छल?

कोचिन – 19.9.94

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

आब हमरा ककरहु सँ डर नहि
आब आबि गेल चल' क ऐब,
जनलहुँ कोना क' हेलल जाइत अछि
जनलहुँ कोना अधमतम हैब!

कोन अदृश्य प्रेरणा छलि ओ
बनल मलीन अजन्ता!
कोन अवद्य अपच्य बात सँ
टूटल सब नीरवता ।
कोन अश्रव्य शब्द छलै' ओ
जाहि सँ जागल शशक उलूक?
केहन अस्पृश्य बाला छलि ओ
जनिकर स्पर्श सँ जागल भूख?
आब ने हमरा भय कोनो अछि,
जनलहुँ कोना क' विनष्ट हैब
आबि गेल अछि दाँतक जोड़ा
आब ने हमरा डर कोनो
शब्द कठिन हो स्तन हो शीतल
वाक्य वृहत् हो रचना कोमल
भाष्य विभीषण पाठो बिखरल
अर्थ अनर्थक भावें विह्वल
आब ने हमरा डर कोनो अछि
जानि गेलहुँ हम ककर हैब!
आब हमरा ककरहुँ सँ डर नहि
आबि गेलै' अछि चल' क ऐब!

अलुआ - 19.9.94